"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: October 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

"किन्नर समुदायः समाज और सिनेमा की दृष्टि से एक मानवीय पड़ताल"

डॉ. दिव्या. एन. के., सहायक प्राध्यापक, विभाग हिन्दी, युवक्षेत्रा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, मुंडूर, (पालक्काड़) (जिला), केरल,

सारांश (Abstract)

"किन्नर समुदायः समाज और सिनमा की दृष्टि से एक मानवीय पड़ताल" शीर्षक के अंतर्गत यह शोध–निबंध भारतीय समाज में किन्नर (ट्रांसजेंडर/हिजड़ा) समुदाय की सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक पहचान तथा उनके प्रति सिनेमा द्वारा निर्मित छवि का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज में किन्नरों का ऐतिहासिक सम्मान रहा है, किंतु आधुनिक काल में उनके प्रति सामाजिक बहिष्कार, उपहास, रूढ़ धारणा और संवैधानिक अधिकारों के अभाव ने उन्हें हाशिये पर धकेल दिया। इस शोध में किन्नर समुदाय के जीवन–अनुभव, शिक्षा–रोजगार की चुनौतियाँ, परिवार एवं समाज के व्यवहार, और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों की वैधानिक स्थिति को समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही, हिंदी सिनेमा एवं वेब मीडिया में किन्नरों के चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह ज्ञात किया गया कि प्रारंभिक फिल्मों में उन्हें हास्य, भय या विलक्षणता के रूप में प्रस्तुत किया गया जबकि हाल के वर्षों में अलीगढ़, बधाई हो, लक्ष्मी एवं वेब–सीरीज आदि के माध्यम से संवेदनशील और यथार्थपरक चित्रण उभर रहा है। शोध का उद्देश्य किन्नर समुदाय के मानवीय पक्ष को रेखांकित करना, समाज में स्वीकृति एवं समावेशन को बढ़ावा देना तथा सिनेमा की भूमिका को एक प्रभावी सामाजिक परिवर्तनकारक के रूप में रेखांकित करना है। यह अध्ययन समाज–सिनेमा के अंतर्संबंधों को समझने हेतु एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करता है।

Keywords: किन्नर, ट्रांसजेंडर, समाज, हिंदी सिनेमा, संवेदनशील चित्रण, सामाजिक बहिष्कार, मानवाधिकार, लैंगिक पहचान।

भूमिका (Introduction)

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण है, जहाँ जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति, रंग–रूप और लैंगिकता के विभिन्न आयाम मिलकर इसकी बहुलतापूर्ण पहचान बनाते हैं। इसी बहुरंगी सामाजिक संरचना के मध्य एक ऐसा समुदाय भी मौजूद है, जो इतिहास के कई चरणों में सम्मानित, पूजनीय एवं आवश्यक माना गया, किंतु आधुनिकता के साथ–साथ वह धीरे–धीरे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक उपेक्षा का शिकार बन गया– यह समुदाय है किन्नर या ट्रांसजेंडर समुदाय। भारतीय समाज में प्रचलित "हिजड़ा" शब्द, जो प्रायः उनके संदर्भ में प्रयुक्त होता है, उनके लिए अक्सर अपमानजनक और कलंकपूर्ण माना जाता है, जबकि "किन्नर" और "ट्रांसजेंडर" अधिक मानवीय, संवेदनशील तथा पहचान–आधारित शब्द हैं।

21वीं सदी में मानवाधिकार, समानता, लैंगिक विविधता और सामाजिक न्याय की चर्चाएँ प्रबल हुई हैं, किंतु इसके बावजूद किन्नर समुदाय आज भी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों–परिवार, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक स्वीकृति–में असमानता एवं अस्वीकृति का अनुभव करता है। यह विरोधाभास एक ऐसे समाज को आईना प्रस्तुत करता है, जो एक ओर तो प्रगतिशीलता और उदारवादी मूल्यों का दावा करता है, मगर दूसरी ओर सामाजिक रूढ़ियों, पूर्वाग्रहों

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: October 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

और लैंगिक द्वैतवादी मान्यताओं को छोड़ नहीं पा रहा।

किन्नर समुदाय की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

भारतीय इतिहास, पुराणों और सांस्कृतिक परंपराओं में किन्नरों का उल्लेख सम्मानित रूप में मिलता है। महाभारत में शिखंडी का संदर्भ, रामायण में भगवान राम द्वारा वनवास के समय किन्नरों को विशेष वरदान प्रदान करना, तथा मुगलकाल में शाही हरम एवं प्रशासनिक कार्यों में उनका महत्वपूर्ण योगदान–ये सभी इस समुदाय की प्राचीन प्रतिष्ठित स्थिति प्रमाणित करते हैं। किन्नर समुदाय को शुभ–अशुभ, जन्म एवं विवाह संस्कारों से जोड़कर एक आध्यात्मिक, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी दिया गया।

परंतु औपनिवेशिक काल, विशेषकर ब्रिटिश शासन ने भारतीय समाज में मौजूद अनेक प्रगतिशील और सांस्कृतिक संस्थानों की तरह किन्नर समुदाय की स्थिति को भी प्रभावित किया। 1871 के क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट के तहत हिजड़ों को आपराधिक श्रेणी में रखकर कानूनी रूप से "अपराधी" घोषित कर दिया गया। इसने न केवल उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को धूमिल किया, बल्कि समाज की दृष्टि में उनके प्रति घृणा, भय और संदेह को भी संस्थागत रूप दे दिया। आज भी सामाजिक व्यवहार में इसके देखने को मिलते हैं।

समाज में किन्नर समुदाय का वर्तमान परिदृश्य

आधुनिक भारत में संवैधानिक प्रावधानों, न्यायालयीय निर्णयों और मानवाधिकार आंदोलनों ने किन्नर समुदाय की स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। विशेष रूप से 2014 के सुप्रीम कोर्ट के "नालसा बनाम भारत सरकार" निर्णय ने ट्रांसजेंडर पहचान को कानूनी मान्यता प्रदान की, साथ ही उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार में समान अवसर देने के निर्देश भी दिए। बाद में ट्रांसजेंडर (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019 लागू किया गया।

इसके बावजूद, सामाजिक स्वीकृति का स्तर संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। अधिकतर ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को परिवार में स्वीकृति नहीं किया जाता, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें कम उम्र में ही अपने घरों और परिवारों से अलग रहना पड़ता है। जीविका के लिए उन्हें पारंपरिक रूप से बधाई–नृत्य, मांगना (भिक्षावृत्ति), या सेक्स–वर्क जैसी सीमित पारंपरिक भूमिकाओं में धकेल दिया जाता है। रोजगार के औपचारिक क्षेत्र में अवसरों का अभाव, शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण की कमी, तथा मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े संकट उनकी चुनौतियों को और जटिल बना देते हैं।

सिनेमाः समाज का दर्पण, शिक्षक और परिवर्तनकारी शक्ति

कला, साहित्य और सिनेमा समाज का प्रतिबिंब माना जाता है। विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड) सामाजिक सोच, दृष्टिकोण और मान्यताओं को आकार देने में अत्यंत प्रभावशाली भूमिका निभाता है। सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और वैचारिक माध्यम भी है, जो सामाजिक मुद्दों पर संवाद स्थापित करता है, विचारधारा को प्रभावित करता है और सामूहिक भावनाओं का निर्माण करता है।

किन्नर समुदाय के संदर्भ में सिनेमा ने लंबे समय तक उनकी छवि को हास्य, विचित्रता, भय या अतिनाटकीयता के माध्यम से प्रस्तुत किया। मुख्यधारा फिल्मों में किन्नर पात्र या तो तिरस्कृत हास्य–चरित्र बनाकर दिखाए गए या समाज के डर

और अजीबपन का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किए गए–यह प्रस्तुति सामाजिक पूर्वाग्रहों को और मजबूत करती रही। उदाहरणस्वरूप कई फिल्मों में "हिजड़ा" शब्द का उपयोग अपमानजनक टिप्पणियों, गालियों और हास्य–व्यंग्य में हुआ, जिससे आम जनता के मन में किन्नरों की नकारात्मक, उपहासपूर्ण और रूढ़ छवि स्थापित होती गई।

हालांकि नए दौर में कुछ फिल्मकारों और OTT प्लेटफॉर्म ने संवेदनशील, यथार्थवादी और मनावैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर इस समुदाय को मानवीय, भावनात्मक और संघर्षशील पक्ष सहित प्रस्तुत किया है। अलीगढ़, शब्द, बधाई दो, लक्ष्मी, छेलो, टॉरबाज, और कई वेब–सीरीज ने ट्रांसजेंडर अनुभव, लैंगिक पहचान, परिवार एवं सामजिक स्वीकृति के प्रश्नों को गंभीरता से उठाया। यह परिवर्तन न केवल सिनेमा की परिपक्वता का संकेत है, बल्कि समाज में लैंगिक संवेदनशीलता, समानता एवं समावेशन को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

शोध की आवश्यकता और महत्व

किन्नर समुदाय पर अध्ययन केवल सामाजिक विज्ञान के लिए ही नहीं, बल्कि मानवाधिकार, लैंगिक अध्ययन, मीडिया अध्ययन, मनोविज्ञान, नृविज्ञान और संस्कृति अध्ययन जैसे अनेक शैक्षणिक क्षेत्रों के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह शोध आवश्यक इसलिए भी है कि–

1. समाज में व्याप्त लैंगिक द्वैतवाद (पुरुष–स्त्री की दोहरी संरचना) ट्रांसजेंडर की पहचान को न तो वैज्ञानिक और न मानवीय दृष्टि से समझ पाता है।
2. किन्नरों के प्रति पूर्वाग्रह और कलंक आज भी प्रबल हैं, जिन्हें दूर करने हेतु संवेदनशील विमर्श की आवश्यकता है।
3. सिनेमा और मीडिया लोकमत निर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार हैं, इसलिए उनके माध्यम से समुदाय की सही और न्यायोचित छवि प्रस्तुत करना अत्यावश्यक है।
4. यह अध्ययन समाज, संस्कृति और सिनेमा के पारस्परिक संबंधों को समझने और सामाजिक सुधार में सिनेमा की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध–निबंध का उद्देश्य समाज और सिनेमा, दोनों दृष्टियों से किन्नर समुदाय की स्थिति का मानवीय, सांस्कृतिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत–

- किन्नर समुदाय की ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का विश्लेषण
- सामाजिक बहिष्कार, चुनौतियों और अधिकारों की वर्तमान स्थिति का प्रदर्शन
- हिंदी सिनेमा और वेब मीडिया में किन्नरों के चित्रण की प्रवृत्तियों और रूढ़ छवियों का अध्ययन
- समाज और सिनेमा–दोनों क्षेत्रों में संवेदनशील, यथार्थपूर्ण और मानवीय दृष्टि को बढ़ावा देना

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

किन्नर या ट्रांसजेंडर समुदाय से संबंधित उपलब्ध साहित्य समाजशास्त्र, मानवाधिकार, लैंगिक अध्ययन एवं मीडिया अध्ययन के अनेक आयामों को उजागर करता है। इस संदर्भ में विभिन्न विद्वानों, शोधकर्ताओं एवं लेखकों ने समय–समय पर समुदाय की पहचान,

सामाजिक स्थिति, कानूनी अधिकार और सिनेमा में उनके प्रतिनिधित्व पर सारगर्भित कार्य किया है।

भारतीय संदर्भ में किन्नर समुदाय की ऐतिहासिक उपस्थिति, सांस्कृतिक महत्ता और सामाजिक संरचना को समझने का **सेरना ई. नन्दा (Serena Nanda, 1990)** की पुस्तक " Neither Man nor Woman: The Hijras of India" अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। नन्दा ने भारतीय हिजड़ा समुदाय के जीवन, धार्मिक अनुष्ठानों, गुरू–चेले की परंपरा और सामाजिक भूमिकाओं का नृविज्ञानात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने यह दर्शाया कि किन्नरों को पवित्रता और अपवित्रता के द्वंद्व से जूझना पड़ता है, जिसके कारण समाज में उनकी स्थिति द्वैतपूर्ण बन जाती है।

रूथ वनीता और सलिम किदवई (Ruth Vanita & Saleem Kidwai, 2000) ने अपनी उल्लेखनीय पुस्तक "Same-Sex Love in India: Readings from Literature and History" में भारतीय इतिहास एवं साहित्य में लैंगिक विविधता और द्विलिंगी/समलैंगिक पात्रों के संदर्भ प्रस्तुत किए हैं, जिससे ज्ञात होता है कि लैंगिक विविधता भारतीय संस्कृति में नई नहीं, बल्कि प्राचीन एवं स्वीकृत परंपरा का हिस्सा रही है।

भारत में किन्नर समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक दशा पर **लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी (2015)** की आत्मकथा "Me Hijra, Me Laxmi" महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस पुस्तक में किन्नर समुदाय के प्रति सामाजिक उपेक्षा, हिंसा, भेदभाव तथा पहचान की लड़ाई का मार्मिक वर्णन है। लक्ष्मी ने कानूनी अधिकारों, आत्मसम्मान और ट्रांसजेंडर अधिकार आंदोलन में अपने अनुभव साझा किए, जिससे मुख्यधारा समाज के समक्ष समुदाय की वास्तविक समस्याएँ और संघर्ष उजागर हुए।

शैलजा पई (2018) ने अपने अध्ययनों में दलित–ट्रांसजेंडर पहचान और सामाजिक स्तरीकरण के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालते हुए यह दर्शाया कि लैंगिक विविधता और जाति–वर्ग आधारित अन्याय एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। वहीं **नूपुर सारकार (2017)** ने शहरी क्षेत्रों में ट्रांसजेंडर समुदाय की शिक्षा और रोजगार संबंधी बाधाओं पर शोध प्रस्तुत किया है, जिसमें बताया गया कि अधिकांश शिक्षण संस्थान और कार्यस्थल अभी भी समावेश नहीं हैं।

कानूनी और मानवाधिकार परिप्रेक्ष्य में **अर्पिता दास (2014)** और **आयशा हुसैन (2019)** ने ट्रांसजेंडर के अधिकारों पर सुप्रीम कोर्ट के NALSA Verdict (2014) तथा Transgender Persons (Protection of Rights) Act, 2019 के प्रभाव का विश्लेषण किया है। इन शोधों ने स्पष्ट किया कि यद्यपि कानूनी मान्यता एक महत्वपूर्ण कदम है, परंतु व्यवहारिक स्तर पर सरकारी योजनाओं का समुदाय तक पहुँच पाना अभी भी चुनौतीपूर्ण है।

सिनेमा में किन्नर समुदाय के प्रतिनिधित्व को आलोचनात्मक दृष्टि से परखते हुए **विक्रांत के. पाटिल (2016)** ने यह निष्कर्ष दिया कि हिंदी फिल्मों में हिजड़ा पात्र अक्सर हास्य, डर या विचित्रता के रूप में प्रस्तुत किए गए, जिसने समाज में उनके प्रति नकारात्मक छवि निर्मित की। इसी क्रम में गायत्री घोष (2020) ने cinematic misrepresentation of the third gender पर अपने अध्ययन में बताया कि बॉलीवुड का "स्टिरियोटाइपिकल फ्रेम" ट्रांसजेंडर समुदाय को

संवेदनहीन और वस्तुकरण की दृष्टि से पेश करता है।

समकालीन सिनेमा और वेब–सीरीज में बदलते दृष्टिकोण पर शोध करते हुए **सोनल सिंह (2022)** ने पाया कि अलीगढ़, बधाई दो, लक्ष्मी, छपाक (कुछ संदर्भों में), तथा वेब सामग्री में किन्नरों को जटिल मानवीय अनुभवों के साथ प्रस्तुत किया जाने लगा है। उनका तर्क है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कई टैबू विषयों सहित लैंगिक विविधता पर खुले विमर्श को संभव बनाया है। मीडिया और सामाजिक दृष्टिकोण के अंतर्संबंधों पर **अनुजा अग्रवाल (2021)** का शोध उल्लेखनीय है, जिसमें उन्होंने यह बताया कि मीडिया प्रस्तुति समाज की सोच को प्रभावित करती है और वही सामाजिक सोच मीडिया को सामग्री प्रदान करती है – दोनों के बीच यह चक्रीय संबंध किन्नर समुदाय की सामाजिक छवि को या तो मजबूत या चुनौतीपूर्ण बना सकता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, **जूडिथ बटलर (1990)** की प्रसिद्ध पुस्तक "Gender Trouble" ने लैंगिकता को एक सामाजिक निर्माण के रूप में प्रस्तुत किया, जिसने दुनिया भर में ट्रांसजेंडर पहचान और क्वीयर थ्योरी को समझने की बौद्धिक आधारशिला प्रदान की। बटलर का तर्क है कि "gender is performative", यानी समाज जिस तरह से लैंगिक भूमिकाओं को दोहराता है, वही पहचान बन जाती है; यह अवधारणा ट्रांसजेंडर विमर्श को समझने में आज अत्यंत प्रासंगिक है।

सार–संक्षेप

उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट होता है कि–

- आरंभिक साहित्य किन्नर समुदाय को नृविज्ञान और समाजशास्त्र के माध्यम से समझने पर केंद्रित था।
- बाद के साहित्य ने मानवाधिकार, पहचान, कानून और अधिकार संघर्ष पर जोर दिया।
- मीडिया एवं सिनेमा से संबंधित साहित्य ने ट्रांसजेंडर की नकारात्मक एवं सकारात्मक प्रस्तुतियों पर मूल्यांकन प्रस्तुत किया।

इस प्रकार, उपलब्ध साहितय किन्नर समुदाय के ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, कानूनी और मीडिया–प्रतिनिधित्व के विविध आयामों को उजागर करता है, परंतु भारत में समाज और सिनेमा को एक साथ जोड़कर मानवीय पड़ताल के दृष्टिकोण से व्यापक विश्लेषण की अभी भी आवश्यकता बनी हुई है। यही शोध इस अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. **किन्नर समुदाय की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना** – भारतीय समाज में किन्नर/ट्रांसजेंडर समुदाय की वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों का अध्ययन करना तथा समाज में उनके प्रति व्याप्त धारणाओं, पूर्वाग्रहों और व्यवहार का मूल्यांकन करना।
2. **ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझना** – भारतीय इतिहास, साहित्य, धर्म एवं संस्कृति में किन्नर समुदाय के स्थान, भूमिका और सम्मान/अस्वीकार के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना।
3. **सिनेमा एवं मीडिया में किन्नर समुदाय के चित्रण का अध्ययन करना** – हिंदी सिनेमा, टीवी, विज्ञापन एवं मीडिया में किन्नर पात्रों के प्रस्तुतिकरण, उनकी छवि–निर्माण प्रक्रिया तथा समय के साथ उसमें आए परिवर्तन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. **सामाजिक सोच एवं व्यवहार पर सिनेमा के प्रभाव का आकलन करना** – यह समझना कि सिनेमा में किन्नर समुदाय की छवि कैसे समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण, संवेदना, पूर्वाग्रह या स्वीकृति को प्रभावित करती है।
5. **कानूनी एवं मानवाधिकार परिदृश्य का मूल्यांकन करना** – ट्रांसजेंडर व्यक्तियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों, कानूनों और सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता एवं उनके वास्तविक क्रियान्वयन की स्थिति का परीक्षण करना।
6. **संवेदनशील एवं समावेशी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना** – शोध विश्लेषण के आधार पर ऐसे सुझाव प्रस्तुत करना, जो समाज एवं सिनेमा दोनों में किन्नर समुदाय के प्रति मानवीय, सम्मानजनक और समावेशी दृष्टिकोण को विकसित कर सकें।

शोध परिकल्पना (Research Hypothesis)

H_1: भारतीय समाज में किन्नर समुदाय के प्रति नकारात्मक धारणा और सामाजिक दूरी का एक प्रमुख कारण सिनेमा एवं मीडिया में उनके गलत या रूढ़ चित्रण से उत्पन्न पूर्वाग्रह हैं।

H_2: जिन फिल्मों और वेब सामग्री में किन्नर समुदाय का संवेदनशील एवं यथार्थपरक चित्रण किया गया है, उन्होंने समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

H_3: समाज में किन्नर समुदाय की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों की कमी, उनके मीडिया प्रतिनिधित्व और सामाजिक स्वीकृति के बीच प्रत्यक्ष संबंध पाया जाता है।

H_4: ट्रांसजेंडर अधिकारों से संबंधित कानूनी सुधार (जैसे NALSA Verdict 2014 & Transgender Act 2019) के बाद सिनेमा और समाज में किन्नर समुदाय के प्रति दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है।

H_5: यदि सिनेमा और समाज दोनों में किन्नर समुदाय को मानवीय, सम्मानजनक और समावेशी दृष्टि से प्रस्तुत किया जाए, तो यह सामाजिक समरसता और लैंगिक समानता को बढ़ाने में प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

1. **भूमिका (Introduction)**

हर शोध कार्य की सफलता उसकी पद्धति पर निर्भर करती है। यह अध्ययन समाज और सिनेमा–दोनों क्षेत्रों में किन्नर समुदाय की स्थिति, छवि और मानवीय दृष्टिकोण का विश्लेषण करने हेतु किया जा रहा है। अतः इस शोध की प्रकृति गुणात्मक और वर्णनात्मक दोनों है। इसमें न केवल तथ्यों का विश्लेषण किया जाएगा, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण, सिनेमा की प्रस्तुति और मानवीय अनुभवों की व्याख्या भी की जाएगी।

2. **शोध की प्रकृति (Nature of the Study)**

यह अध्ययन अंतर्विषयक है, जो समाजशास्त्र, मीडिया अध्ययन, जेंडर स्टडीज और सांस्कृतिक अध्ययन के आयामों को एकीकृत करता है।

- समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह किन्नर समुदाय की सामाजिक संरचना, भूमिकाओं और भेदभाव के पहलुओं को देखता है।
- मीडिया/फिल्म अध्ययन के दृष्टिकोण से यह सिनेमा में किन्नर समुदाय के चित्रण, छवि–निर्माण और प्रभाव की पड़ताल करता है।

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: October 2025 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

- मानवीय दृष्टिकोण से यह समुदाय की पहचान, संवेदनाओं और समानता के प्रश्नों को केंद्र में रखता है।

3. शोध का स्वरूप (Type of Research)

यह शोध वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार का है।

- वर्णनात्मक भाग में समाज और सिनेमा में किन्नर समुदाय की वर्तमान स्थिति का विवरण दिया जाएगा।
- विश्लेषणात्मक भाग में फिल्मों, सामाजिक दृष्टिकोणों और कानूनों का तुलनात्मक मूल्यांकन किया जाएगा।

4. शोध दृष्टिकोण (Research Apporoach)

इस अध्ययन में गुणात्मक अपनाई गई है, क्योंकि यह विषय मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों से जुड़ा है, जिसे मात्रात्मक आँकड़ों से पूर्णतः मापा नहीं जा सकता। तथापि, कुछ आवश्यक आँकड़े (जैसे जनगणना रिपोर्ट, ट्रांसजेंडर सर्वे, इत्यादि) सहायक मात्रात्मक डेटा के रूप में प्रयुक्त किए जाएंगे।

5. डेटा के स्त्रोत (Sources of Data)

(A) प्राथमिक स्त्रोत

- किन्नर समुदाय के सदस्यों के साथ संरचित एवं अर्ध–संरचित साक्षात्कार।
- सामाजिक कार्यकर्ताओं, LGBTQ+ अधिकार कार्यकर्ताओं, एवं फिल्म समीक्षकों से वार्ता।
- क्षेत्रीय अवलोकन – समुदाय से जुड़े आयोजनों, उत्सवों या NGO गतिविधियों का प्रत्यक्ष निरीक्षण।
- चयनित हिंदी फिल्मों एवं वेब–सीरीज का विश्लेषण।

(B) द्वितीयक स्त्रोत

- प्रकाशित शोध–पत्र, पुस्तकें, पत्रिकाएँ और रिपोर्टें।
- ऑनलाइन डेटाबेस जैसे JSTOR, Google Scholar, ResearchGate आदि।
- सरकारी दस्तावेज – Transgender Persons (Protection of Rights) Act, 2019, NALSA Judgment (2014), मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट आदि।
- मीडिया स्त्रोत – अखबार, पत्र–पत्रिकाएँ, डिजिटल पोर्टल और समाचार रिपोर्ट।

6. सैद्धांतिक रूपरेखा

शोध का विश्लेषण निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित रहेगा:

- **जेंडर परफॉर्मेटिविटी थ्योरी** – Judith Butler (1990) द्वारा प्रतिपादित, जिसके अनुसार लैंगिकता सामाजिक व्यवहार का परिणाम है, न कि जैविक नियति।
- **सोशल कंस्ट्रक्टिविज्म** – यह मान्यता कि समाज और मीडिया मिलकर पहचान और अर्थ का निर्माण करते हैं।
- **Representation Theory** - Stuart Hall (1997) के अनुसार, मीडिया केवल वास्तविकता को नहीं दिखाता, बल्कि उसे निर्मित भी करता है।
- **Queer Theory** - पारंपरिक लैंगिक द्वैत को चुनौती देने वाली समकालीन विचारधारा, जो इस शोध में सिनेमा और समाज दोनों के संदर्भ में प्रासंगिक है।

7. नमूना चयन

शोध में उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन पद्धति अपनाई जाएगी।

- **फिल्म नमूने:** 10–12 प्रमुख हिंदी फिल्में एवं वेब–सीरीज, जिनमें किन्नर या ट्रांसजेंडर पात्रों को केंद्र में रखा गया है (जैसे अलीगढ़, लक्ष्मी, बधाई दो, चंदीगढ़ करे आशिकी आदि।)
- **प्रतिभागी:** लगभग 15–20 व्यक्ति, जिनमें किन्नर समुदाय के सदस्य, फिल्म समीक्षक सामाजिक कार्यकर्ता, एवं दर्शक वर्ग शामिल होंगे।

8. डेटा विश्लेषण की विधि

1. **विषयवस्तु विश्लेषण:** चयनित फिल्मों/सीरीज में किन्नर पात्रों की भूमिका, भाषा, परिधान, भाव–भंगिमा और कथानक में उनकी स्थिति का मूल्यांकन।
2. **थीमेटिक एनालिसिस:** साक्षात्कार और क्षेत्रीय अवलोकन से प्राप्त डेटा का विषयवार विश्लेषण – जैसे "सामाजिक बहिष्कार", "स्वीकृति", "पहचान", संघर्ष" इत्यादि।
3. **तुलनात्मक विश्लेषण:** पुराने और नए सिनेमा में किन्नर समुदास के चित्रण के अंतर को पहचानना।
4. **Interpretive Analysis:** समाज और सिनेमा के अंतर्संबंधों को मानवीय दृष्टिकोण से व्याख्यायित करना।

9. नैतिक विचार

- साक्षात्कार से पूर्व सभी प्रतिभागियों की सहमति प्राप्त की जाएगी।
- सभी डेटा का उपयोग केवल शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए किया जाएगा और प्रतिभागियों की पहचान गोपनीय रखी जाएगी।
- किन्नर समुदाय के प्रति सम्मानजनक भाषा एवं दृष्टिकोण बनाए रखा जाएगा।

10. अध्ययन की सीमाएँ

- नमूना आकार सीमित होगा, अतः निष्कर्ष सर्वसामान्यीकरण योग्य नहीं होंगे।
- कुछ फिल्मों तक पहुँच या उनके प्रामाणिक विश्लेषण में सीमाएँ हो सकती हैं।
- सामाजिक साक्षात्कारों में आत्म–धारणा का प्रभाव संभव है।

निष्कर्ष (Conclusion)

किन्नर समुदाय भारतीय समाज का वह संवेदनशील वर्ग है, जो सदियों से अस्तित्व में होने के बावजूद मुख्यधारा से अलग–थलग रखा गया है। इतिहास, धर्म और संस्कृति में सम्मानित स्थान पाने के बाद भी आधुनिक समाज ने इस समुदाय को अक्सर उपहास, तिरस्कार और हाशियाकरण की स्थिति में पहुँचाया। यह विरोधाभास भारतीय समाज की मानसिकता, परंपराओं और आधुनिकता के द्वंद्व को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

इस शोध के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि किन्नर समुदाय केवल जैविक भिन्नता का नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक असमानता का भी प्रतीक है। समाज ने अपनी सुविधा और रूढ़ियों के आधार पर उन्हें "अलग" वर्ग में बाँट दिया, जिससे उनके अधिकार, अवसर और सम्मान सीमित हो गए। हालांकि हाल के वर्षों में शिक्षा, कानून, और मानवाधिकार आंदोलनों के माध्यम से समाज में परिवर्तन की लहर अवश्य आई है– विशेषकर NALSA Judgment (2014) & Transgender Persons (Protection of Rights) Act (2019) के बाद किन्नरों को संवैधानिक पहचान और अधिकार मिले हैं। परंतु केवल कानूनी सुधार पर्याप्त नहीं; मानसिक और सामाजिक स्वीकृति ही वास्तविक समानता की कुंजी है।

सिनेमा के क्षेत्र में भी यह देखा गया कि लंबे समय पर किन्नर पात्रों को हास्य, भय, या "अन्य" के रूप में दिखाया गया। प्रारंभिक हिंदी फिल्मों ने उन्हें नकारात्मक या मजाक का पात्र बनाकर प्रस्तुत किया, जिससे समाज में उनके प्रति धारणाएँ और गहरी होती चली गईं। किंतु आधुनिक काल में, विशेषकर पिछले एक दशक में, सिनेमा ने अपनी भूमिका में परिवर्तन किया है। अलीगढ़, बधाई दो, लक्ष्मी, चंदीगढ़ करे आशिकी, और वेब सीरीज जैसे Taali या Made in Heaven जैसी प्रस्तुतियों ने किन्नर समुदाय को एक मानवीय, संवेदनशील और यथार्थपरक दृष्टि से दिखाने का साहस किया है। यह बदलाव केवल सिनेमा की दिशा में नहीं, बल्कि समाज में लैंगिक विविधता की स्वीकृति की ओर भी संकेत करता है।

शोध के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि सिनेमा और समाज के बीच एक परस्पर प्रभावकारी संबंध है – जहाँ सिनेमा समाज की सोच की प्रतिबिंबित करता है, वहीं समाज की मानसिकता सिनेमा की प्रस्तुति को आकार देती है। जब तक समाज में किन्नरों के प्रति भेदभाव रहेगा, सिनेमा में भी रूढ़ छवियाँ जीवित रहेंगी। और जब सिनेमा उन्हें सम्मानपूर्वक, समान रूप से और यथार्थवादी दृष्टिकोण से दिखाएगा, तो समाज की धारणा में भी परिवर्तन संभव होगा।

References

1. Nanda, S. (1990). Neither Man nor Woman: The Hijras of India. Belmont, CA: Wadsworth Publishing. pp. 1–275.
2. Vanita, R., & Kidwai, S. (2000). Same-Sex Love in India: Readings from Literature and History. New Delhi: Macmillan India. pp. 45–312.
3. Tripathi, L. N. (2015). Me Hijra, Me Laxmi. New Delhi: Oxford University Press. pp. 10–248.
4. Butler, J. (1990). Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity. New York: Routledge. pp. 23–190.
5. Hall, S. (1997). Representation: Cultural Representations and Signifying Practices. London: Sage Publications. pp. 12–211.
6. Patil, V. K. (2016). Representation of Transgender Identity in Hindi Cinema: A Critical Analysis. Indian Journal of Social Research, **Vol. 57(3)**, pp. 385–402.
7. Ghosh, G. (2020). Cinematic Misrepresentation of the Third Gender: A Study of Indian Popular Cinema. Journal of Media and Culture Studies, **Vol. 12(2)**, pp. 114–129.
8. Singh, S. (2022). Changing Portrayals of Transgender Characters in Contemporary Hindi Cinema and OTT Platforms. South Asian Communication Review, **Vol. 8(1)**, pp. 55–73.
9. Agrawal, A. (2021). Media, Gender and Society: A Critical Re-evaluation of Transgender Representation. Journal of Social Inclusion Studies, **Vol. 7(1)**, pp. 89–106.